भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 21 अंक : 3	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चंदा : 50.00
गुरुवार, 26.3.98	मार्च, 1998	प्रति अंक : 05.00

रामनवमी..... श्री स्वामिनारायण जयंती !

5 अप्रैल.... रामनवमी यानि–मानवरूप में स्वयं साक्षात् पुरुषोत्तमनारायण के अवतरित होने का दिन ! सनाथ होने का दिन..... संबंध में आये जीवों का आत्यंतिक कल्याण करके केवल कृपा से परम सुखी बनाने वाली महामंगलकारी अद्‌भुत विभूति का धरती पर प्रार्दुभाव....

भगवान कोई हुआ नहीं, ना ही होगा.... पर सांगोपांग नख से शिखा तक प्रभु धारी हुई, ठीक प्रभु की ही सत्ता, सामर्थ्य, ऐश्वर्य, प्रताप युक्त विभूति प्रभु स्वयं अक्षरधाम से धरती पर भेजते हैं..... मानवरूप में संबंधमात्र से जीवों का कल्याण करने स्वयं भगवान राम, भगवान कृष्ण, ईसा मसीह, मोहम्मद पैगम्बर धरती पर पधारे.... पर, उन्हें बहुत ही कम लोग पहचान पाये। तत्कालीन समाज उन्हें पहचान नहीं पाया..... श्रीजी महाराज ने तो जीवों पर केवल करुणा करने ब्रह्मस्वरूप विभूतियों द्वारा अपना प्रागट्य धरती पर अखंडित रख दिया.... उसी ब्रह्मज्योति स्वरूप प्रगट विभूतियों के रूप में प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई हमें मिले हैं..... हम सब की तो मुफ्त में लॉटरी लग गई है। तो आज इन प्रगट स्वरूपों के साथ ऐसा दिव्य संबंध कर लें, उन्हें तत्त्व से पहचान लें.... और पहले समाज द्वारा करी भूल को हम दोहराएं नहीं..... एक बात तो खूब पक्की है कि महाराज के स्वरूप का यथार्थ–तत्त्व से दर्शन केवल इन प्रगट स्वरूपों को ही है..... क्योंकि हमारे मायिक चक्षु, अंतःकरण के मायिक आवरणयुक्त स्पंदन-मन बुद्धि के तर्क उन्हें कहां पहचान पाएंगे ?

आईये, 1969 में श्रीजी महाराज की जयंती के पर्व पर कर्थावार्ता के रूप में श्रीजी महाराज व इस गुणातीत परंपरा के बारे प्रासादिक वाणी में जो प्रकाश उपलब्ध हुआ है–उसे निहारें.....

'श्रीजी महाराज और स्वामी एक व अद्वितीय रहकर इस पृथ्वी पर पधारे; वे फिर ना आये हैं ना आएंगे। यह कहने का रहस्य यह है कि सभी अवतारों के अवतारी पुरुषोत्तमनारायण ने पहली बार मानवदेह धारण करके कारण व महाकारण के भाव टालने के लिए आत्यंतिक कल्याण की अनोखी रीति अख्त्यार करी-अखंडित रखी। यूं सनातन गुणातीत भावना को मूर्तिमान करके आत्मा परमात्मा के अनादि स्वरूपों का ज्ञान सभी के लिए यावच्चन्द्रदिवाकरौ सुलभ बनाया। मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी के जन्म स्थान महातीर्थ–भादरा में सत्संग सप्ताह के दौरान गुरुहरि योगीजी महाराज ने यह रहस्य समझाते हुए बताया था कि–वैराटनारायण में से सभी अवतार प्रगट होते हैं। सो, वैराट नारायण बड़े, फिर भी उनकी उपासना की अपेक्षा रामकृष्णादि अवतारों–जिन्होंने मानव देह धारण करी हो, उनकी उपासना विशिष्ट शक्तिशाली और प्रतापी रहती है और उन्हें लक्ष्य में रख कर जो कुछ भक्ति-भावना-आराधना करने में आती है, वह ऐसे अवतारों के अंतर्धान होने के बाद भी चैतन्य स्वरूप से भूमंडल में उन्हें पहुंचती है। यूं वैराट नारायण के उपासक को संस्कार पड़ते हैं, जबकि रामकृष्णादिक के उपासक को संस्कार से अतिरिक्त उसका कल्याण भी होता है। लेकिन वे अवतार अब परोक्षभाव से ही भजे जायेंगे, सो दीर्घ काल में कल्याण होता है। हमारे लिए तो मानवदेह में महाराज पधारे.... सो, 'एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो' इस उक्ति के मुताबिक एक ही प्रणाम से अंतकाल में हमारा आत्यंतिक कल्याण तो पक्का है ही, लेकिन **विशिष्टता** यह है कि–**वह प्राकट्य अखंडित रहने से उस स्वरूप को सम्यक्**

पहचान कर एक ही प्रणाम करने से जीतेजी ही आत्यंतिक कल्याण की अनुभूति, सुख, शांति और आनंद मिलता है।

इस प्रकार, सर्वावतारी पुरुषोत्तमनारायण ने मानवदेह धारण किया, अनंत चरित्र किए, अद्भुत ऐश्वर्य-प्रताप दिखाये और 21 वर्ष की आयु में एक-एक अवतार जैसे एक साथ 500 चुनिंदे महारथी संतों को बना कर गुणातीत स्वरूपों या तद्वद् भाव को पाए मुक्तों द्वारा अपना प्राकट्य धरती पर अखंडित रख कर सभी के लिए जीतेजी आत्यंतिक कल्याण सुलभ किया !

यूं आज प्रगट के श्रेयार्थी उपासकों गुरुहरि योगीजी महाराज की स्मृति के साथ जो कुछ भजन, भक्ति, सेवा, कीर्तन, धून्य, ध्यान करें–तो, उस भावना को हाथ पैर आकर मूर्तिमान बनते हैं और तत्काल अर्चिमार्ग से चैतन्य के प्रवाह के रूप में प्रगट के संबंध से महाराज, स्वामी और मुक्त साक्षात् उन्हें ग्रहण करते हैं, जिसके फलस्वरूप जीव का मायिकभाव टल जाकर वह जीतेजी अक्षरधाम का सुख प्राप्त करता है।

तो, महाराज के इस प्राकट्य दिन पर महाराज के ऐसे ही प्रगट स्वरूप प.पू. स्वामीबापा का अनुसंधान रख कर परिताप करके जहां जो समाज स्वामिनारायण महामंत्र जपता हो वहां–वह दिव्यता और सुहृद्भाव से जीता हो जाए और गुरुहरि को हम से जो करवाना है वह जल्दी ही सिद्ध हो और स्वभावरहित होकर सभी अक्षरधाम का सुख लेते हो जाएं यही प्रार्थना !

स्वामिनारायण भगवान की शक्ति इस प्रकार पृथ्वी पर और **खासतौर से भारत में** खुल्लं खुल्ला प्रगट होकर व्यापक स्वरूप में कार्य करती हो गई है। तो विश्वधर्म की सर्वजीव-हितावह गुणातीत भावना–उसके संतों द्वारा प्रवर्त कर पत्ते-पत्ते से स्वामिनारायण का भजन करवाने मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का संकल्प धीरे-धीरे सिद्ध होता जाए–यही श्रीहरि की जयंती के मंगलकारी दिन प्रार्थना.....'

✡✡✡✡✡

अनिर्देश की गतिविधियाँ

✡**'याहोम जीवन कर दें, अनमोल समय आया.....'** दिल में ऐसी भावना लिए हुए, 7 मार्च '98–**प.पू. काकाजी के स्वधामगमन दिन** की सुबह 7.30 बजे **प.भ. नवीनभाई के घर से** सभी हरिभक्तों द्वारा विदाई लेते हुए **पू. निर्दोष (सुपुत्र-अक्षरनिवासी प.भ.जगुसेठ) व पू. ऋषि (सुपुत्र-प.भ. मूलचंदजी)** त्यागाश्रम की दीक्षा लेने मंदिर के लिए रवाना हुए.... भीतर में सभी को एक उमंग थी कि दिल्ली मंदिर में एक अद्भुत शुभ प्रसंग का मौका था। खूब नाचते-गाते हुए मुक्तगण पू. निर्दोष व पू. ऋषि को लेकर मंदिर आए। प.पू. गुरुजी 'अनिर्देश' के प्रांगण में ही झूले पर बैठे उनका बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। उनके मुख पर एक अलग ही प्रकार की खुशी-उमंग व भाव थे। उन्हें मन में शायद ऐसा विचार आ रहा होगा कि–ओहो ! आज स्थूलरूप से प.पू. काकाजी यह देखकर कितने खुश होते.....

मंदिर में आने पर इन दोनों सेवकों की मुंडन विधि का कार्यक्रम शुरू हुआ..... सभी की आखों में हर्ष के आंसू थे। दोनों सेवकों की उमंग तो देखते ही बनती थी और प.पू. गुरुजी की भीतर की प्रसन्नता तो उनके मुख से झलकती ही थी... देखा जाए तो यह एक नई शुरुआत थी कि प.पू. गुरुजी के स्वहस्त दिल्ली जैसी माया नगरी में दो युवा सेवक साधु की दीक्षा ले रहे थे.... जो कि बहुत बड़ी बात है !

मुंडन विधि के पश्चात् सभी ऊपर हॉल में ठाकुरजी के पास गए। वहां पर **तीर्थस्थान ताड़देव के योगेश्वर पू. वशीभाई** ने प.पू. गुरुजी, पू. भाईस्वामिजी, पू. महेन्द्र बापू, पू. हेमंतभाई मर्चंट व सभी हरिभक्तों की हाज़िरी में महापूजा सम्पन्न करी। दोनों सेवकों ने 'प्रतिज्ञा' करके प.पू. गुरुजी के हाथों पार्षदी दीक्षा ग्रहण करी और उन्होंने **पू. निर्दोष भगत व पू. ऋषि भगत** के नाम धारण किये..... दोनों भगत को पार्षद दीक्षा निमित्त आशिष प्रदान करते हुए प.पू. गुरुजी ने **मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी** का एक प्रसंग बता कर अपनी निजी भावना प्रदर्शित करते हुए कहा कि–'एक बार सद्. नित्यानंदस्वामी के कुछ बातें करने के आग्रह पर मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने एक ही वाक्य में सद्गुरु पंक्ति के उन मुनि को कहा कि–**मैं तो एक ही बात समझता हूँ कि हम सत्संग में ऐसे रहें, जिससे कि स्वामिनारायण की लाज रहे; इसके अलावा मैं और कुछ समझता नहीं.....'**

और फिर दिल्ली के लिए किए प.पू. काकाजी के अनथक् परिश्रम की बात करते हुए तो प.पू. गुरुजी का अश्रुबंध टूट गया ! 'काकाजी मुंबई से दिल्ली चेयर कार में आये-गये....रिक्शा में घूमे... दिसम्बर की कड़ी सर्दी में सुबह चार बजे खुल्ली जीप में कुरुक्षेत्र गए और वहां से रात को देर से वापिस आकर भी मंदिर की जमीन के लिए तत्कालीन गवर्नर मा. श्री जगमोहनजी को मिलने गए.... हमारे लिए काकाजी ने ऐसा जो परिश्रम किया हुआ है उसकी बदौलत आज ये सारी खुशियों का नज़ारा है, ना कि हमारे कारण !'

प.पू. गुरुजी ने उम्मीद के फूलों से यह सपना सजाया है कि–अब चारों संत मिल कर प.पू. काकाजी की खूब शोभा बढ़ाएं.... बस ! इस ध्येय को हम कभी भूलें नहीं जिससे उनके भीतर कभी यह महसूस ना हो–'एक भेदी लूट गया.... हर साथी छूट गया'!

सच ! प.पू. गुरुजी की गुरुभक्ति को कोटि-कोटि धन्यवाद और साथ ही करोड़ों धन्यवाद प.पू. काकाजी को कि दिल्ली के हरिभक्तों को प.पू. गुरुजी रूपी अनमोल भेंट दी; जो अपनी भावना व वर्तन द्वारा हम सभी के लिए आदर्श स्थापित करते हैं..... प.पू. गुरुजी का आशिष पाकर सभी ने प्रसाद लिया और स्वयं को धन्य किया।

✡✡**15 मार्च '98 यानि–'गुरुभक्ति यज्ञ' की पूर्णाहुति** ! आज का दिन तो खूब मंगलकारी था क्योंकि 'अनिर्देश' के प्रांगण में **प.पू. गुरुजी की 61वीं जन्म जयंती** मनाई जा रही थी और **पू. निर्दोष भगत व पू. ऋषि भगत को भागवती दीक्षा** देने की आनंदित घड़ी थी.....

सुबह करीब आठ बजे प्रगट ब्रह्मस्वरूप–प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. गुरुजी व संतगण की दिव्य हाज़िरी में पू. दासस्वामी ने महापूजा का शुभ प्रारंभ किया..... भगवा वस्त्रों में दोनों भगतों का रूप अलग ही लगता था..... नये होते हुए भी वे मानों पुराने ही दिखाई पड़ते थे..... प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी व प.पू. गुरुजी के करकमलों द्वारा दोनों ने भागवती दीक्षा प्राप्त करी और **पू. निर्दोष भगत को पू. साधु संकल्पस्वरूपदास** व **पू. ऋषि भगत को पू. साधु निमित्तस्वरूपदास** नाम दिया गया..... तत्पश्चात् प.पू. पप्पाजी और प.पू. स्वामिजी ने भागवती दीक्षा विधि निमित्त आशिष प्रदान किया.....

महापूजा संपन्न होने के बाद सभी गुणातीत स्वरूप अक्षरज्योति की जमीन पर रक्षाकवचरूपी फूल छांटने गए.... वहां से आने के बाद सभी ने अल्पाहार व जलपान किया और फिर प.पू. गुरुजी की जयंती मनाने के लिए सभी पंडाल में एकत्रित हो गए !

'अनिर्देश' की सजावट तो देखते ही बनती थी.... 15-20 दिन से रात-दिन एक करके पू. निमित्तस्वामी, पू. संकल्पस्वामी, पू. आशिष, पू. टीटू, पू. गौरू, पू. विजय (कालू), पू. सागर वगैरह द्वारा करी गई सेवा आज रंग लाई..... अनिर्देश के वॉक वे में लकड़ी पर थर्मोकोल को ईंटों का आकार व रंग देकर एक प्रवेश द्वारा तैयार किया था, जिसे देखकर सभी धोखा खा जाते थे कि शायद यह द्वार नया ही बनाया क्या ? स्टेज के बीचोंबीच थर्मोकोल की कटिंग की खप्रैल की एक झोंपड़ी में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज की मूर्ति थी.... उस झोंपड़ी के एक ओर वैसी ही झोंपड़ी में प.पू. पप्पाजी व प.पू. स्वामिजी का आसन स्थापित था तो दूसरी ओर प.पू. काकाजी का कटआऊट रखा था व साथ में प.पू. गुरुजी का आसन लगाया था.....

धून्य-भजन की दिव्य गूंज से सभा का प्रारंभ हुआ..... कई हरिभक्तों–महानुभावों ने प.पू. गुरुजी के प्रति अपने भाव व्यक्त करते हुए प्रासंगिक उद्‌बोधन किए। प.पू. गुरुजी की हाल ही में बाई-पास सर्जरी हुई थी सो–उस दौरान सभी जिस भावना से गुज़र रहे थे, उसे व्यक्त करने दिल्ली गुणातीत समाज की ओर से प्रार्थनारूपी एक हार प.पू. गुरुजी को अर्पण किया..... उस पर लाल रंग के छोटे-छोटे दिल बनाकर लगाए थे और हर एक दिल पर 'G' यानि–गुरुजी लिखा था। हार के पेन्डन्ट में श्री अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति लगाई थी व 'LONG LIVE OUR HEALTHY GURUJI' लिख कर सब की ओर से प.पू. गुरुजी को प्रार्थना करी कि–'आप हम सभी के दिलों की धड़कन हो, तो कृपया कभी अपने हार्ट या अपनी देह पर कुछ भी बीमारी ग्रहण नहीं करना.....' फिर प.पू. स्वामिजी ने प.पू. गुरुजी की जयंती की केक काटी....

दूसरी ओर **पू. शीला आंटी का भी जन्म दिन** था, सो उनका भी फूलों के हार से स्वागत किया व उन्होंने भी केक काटा... साथ ही 'गुरुभक्ति यज्ञ' की पूर्णाहुति रूप में एक **'एलार्म पीस'** प्रदर्शित करा गया, जिसका उद्‌घाटन पू. शीला आंटी के वरद् हस्तों हुआ..... **इस एलार्म पीस की विशेषता यह है कि इसमें प.पू. काकाजी की मूर्ति है और एलार्म में 'जय श्री स्वामिनारायण' की गूंज बजती है। भावना यही है कि सुबह की शुरुआत में ही प्रभु का नाम कानों में पड़े व गुरुहरि प.पू. काकाजी के दर्शन हों..... यह एलार्म पीस 'अनिर्देश' मंदिर-दिल्ली से एवं तीर्थस्थान ताड़देव से प्राप्त हो सकेगा.....** प.पू.गुरुजी को जयंती निमित्त स्वरूपों ने आशिष प्रदान किए....अंत में प.पू. गुरुजी ने एकत्रित मुक्त समाज को आशिष प्रदान किया....इस प्रकार आशिष प्राप्त करके–प्रसाद पाकर सभी इन स्मृतियों को संजो कर गए.....

✡✡✡

भागवती दीक्षा के अवसर पर आशिष प्रसाद

✡ हिन्दुस्तान के पाटनगर में आज पहली बार काकाजी के संकल्पस्वरूप साधु की दीक्षा ले रहे हैं–निमित्तस्वरूपदास, और संकल्पस्वरूपदास.....दोनों जने गुरुजी का प्रकाशरूप बन कर साधुता प्राप्त करें और योगीजी महाराज की खूब-खूब शोभा बढ़ायें–ऐसी अन्तर की प्रार्थना व आशीर्वाद !

–प.पू. पप्पाजी

✡

✡ निमित्तस्वरूपदास और संकल्पस्वरूपदास–दोनों गुरुजी के पहले से ही दृष्टिप्रसाद बनकर सेवा में डूबे हुए थे। वो दोनों साधु जैसे ही पहले से थे....प्रभु का व भगवत्स्वरूपों का निमित्त भुल्का बनकर थ्रू आऊट लाईफ दोनों संत अपनी साधना शांति से मन-बुद्धि के पार जाकर करते रहे.....सच्चे अर्थ में गुरुजी का वो निमित्त सेवक बनें, भुल्का बनें.....

.....आँख में सिर्फ एक आकार, कान में सिर्फ एक आवाज़, जीभ से सिर्फ केवल पोज़िटीव गुणगान और प्रभु की सेवा.....भक्तों में लय व रसबसता....मन का मनोरथ तू ही, चित्त के चिंतवन् में तू ही, बुद्धि के निश्चय में तू ही, अहम् के आनंद में तू ही। ऐसी एक अद्भुत भावना से वो जीवन जी सकें.....

आज काकाजी को बहुत खुशी होती होगी। शास्त्रीजी महाराज का जो संकल्प था.....काकाजी के वचन से गुरुजी निमित्त बने, एक अद्भुत सेवा हो गई।

अक्षरपुरुषोत्तम उपासना के लिए मंदिर आवश्यक ही है। अब गुरुजी सुहृद्सम्राट काकाजी के आदेश के मुताबिक सुहृद्भाव से अद्भुत उठाव ले रहा है। एक आत्मीय समाज दिल्ली की धरती पर साकार बने–उस संकल्प से दिल्ली की धरती पर काम-सेवा कर रहे हैं.....तो महाराज व काकाजी का संकल्प साकार करने और गुरुजी की अन्तर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए दोनों सेवक सम्यक् निमित्त बनें–ऐसी दिल से गुणातीत पुरुषों के चरणाविंद में बल-बुद्धि देने के लिए प्रार्थना करते हैं.....

.....साधु के कपड़े पहनना वो तो ईज़ी बात है.....ये तो पहले से साधु ही थे। पर, **निमित्त बनना एक अलग चीज़ है।** हनुमानजी रामचंद्रजी की सेवा में निमित्त बना–पर किंचित्, अहम की लकीर जब आ जाती थी तो अन्तर से पश्चाताप करके रामचंद्रजी के चरणाविंद में वो प्रार्थना करते थे.....साधक और स्वरूप के बीच में जब मन-बुद्धि आती है, तब जागृत रहना चाहिए कि 'मेरे संकल्प–मेरा निश्चय ऐसा होना चाहिए' कि बजाय मेरा अहम् तुझ में लय होना चाहिए। 'आप हो तो मैं हूँ–आपसे ही जीता हूँ, आपसे ही मेरा हलन-चलन है। आपसे ही मेरे इन्द्रियाँ व अंतःकरण चलने वाले हैं। साधक का जीवन एक आन्तरिक युद्ध का जीवन है। जाग्रत चैतन्य ही भगवान भज सकता है.....'

–प.पू. स्वामिजी

✡✡✡

प.पू. गुरुजी की जयंती के अवसर पर आशिष प्रसाद

✡ .....आज काकाजी होते तो बहुत आनंद में होते क्योंकि साधु द्वारा ही साधु बनता है। ऐसे साधु काकाजी थे, तो काकाजी ने साधुस्वरूप गुरुजी दिए और साधुस्वरूप गुरुजी ने काकाजी के गुण प्राप्त करके दो साधु निमित्तस्वरूप व संकल्पस्वरूप साधुस्वरूप बनाये। अब खुद के जैसा ही इन्हें बनायें और इन्हें साधु के गुण दें, साधुता दें और गृहस्थ, त्यागी, बहनों एवं साधु– यूं चारों पंखुड़ियों के समाज को पोषण देकर सुखी करें–यह अन्तर की प्रार्थना व आशीर्वाद !

–प.पू. पप्पाजी

✡

✡ .....भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत में लिखा है, ऐसा कौन-सा साधन है जो मुझे पहुँचे और मैं प्रसन्न हो जाऊँ? मैं केवल कृपासाध्य हूँ.....

.....काकाजी हमेशा एक बात किया करते थे.....जब से संत की प्राप्ति तब से साधना की पूर्णाहुति.....सुनने में यह बात बहुत अच्छी लगती है, लेकिन संत को सही अर्थ में वच.प्र-27, 62, 58, 67, पंचाला-4, लोया 9-13, अंत्य. 2-5-38 के मुताबिक मन, कर्म, वचन से जितना सेवन करेंगे, उतना ही संत हमारा होगा.....

गुरुजी का एक स्वभाव कि वो अकेले नहीं रह सकते। पर, काकाजी के साथ प्रीति-लगाव इतना था, जिसके कारण वो कई सालों तक दिल्ली में एकांत में रहे। काकाजी ने गुरुजी पर सम्पूर्ण अधिकार कर लिया.....काकाजी को गुरुजी का इतना अधिक विश्वास कि गुरुजी मेरा ही है, मेरे अभिप्राय के मुताबिक वो भक्ति करने वाला ही है.....

रोज़ स्वाध्याय, भजन-प्रार्थना करनी है.....मन माने या ना माने, बुद्धि साथ दे ना दे–'मैं आपकी दुनिया में घूमता रहूँ.....' बस ! ऐसा संकल्प करने का दिन है। भगवत्स्वरूप का प्रागट्य दिन मनाने जब इकट्ठे हुए हैं, तब मन-बुद्धि के पार, विश्वास दृढ़ करने का दिन है.....हमारे क्रियायोगों में उसकी स्मृति कितनी चली गई? रात्रि को हर रोज़ भजन और स्वाध्याय करके अपना संबंध बढ़ाने के लिए प्रयत्न करना.....

.....मनुष्यभाव अवश्य आने वाला ही है, पर हम जाग्रत रहें। कितना विश्वास, कितना अविश्वास, कितनी निश्चिंतता, कितनी चिंता, कितना गुण लिया, कितना अभाव–भावफेर में चले गये, कितना दिव्यभाव, कितना मनुष्यभाव.....हम भजन-प्रार्थना करते रहें और निष्कपटभाव से लोया-5 के मुताबिक उसके साथ बर्ताव करते रहें.....एक ही साधना है..... मध्य–41 के मुताबिक मैं मेरी आत्मा की सेवा करूं.....

1999 में जब हम गुरुजी का प्राकट्य दिन मनायें तब लेखा-जोखा निकालें कि हमारा संबंध कितना बढ़ा?

काकाजी के जीवन में सिर्फ मैंने संबंधयोग देखा....काकाजी एक ही बात किया करते–कौन मिला है? 'संबंध' एक ही साधना है। जितना संबंध बढ़ेगा, महिमा से-स्वरूपनिष्ठा से जुड़े रहोगे, उतना ही बुद्धियोग वो देने ही वाले हैं। पप्पाजी ने 1981 में सूत्र दिया.....अल्प संबंध वालों में महाराज देखो.....

.....सच्चे हृदय से सारंगपुर-9 के मुताबिक सत्पुरुष के वचन में श्रद्धा-विश्वास जितना रहेगा, उतना ही कचरा प्रकृति का, माया का, रज, तम, सत्त्व का, काम-क्रोधादिक दोष का, हठ, मान, ईर्ष्या का सहजता से निकलता जायेगा.....उतनी दृष्टि बदलती जायेगी, वृत्तियाँ खत्म हो जाएंगी, महिमा–संबंध की दृष्टि प्राप्त होगी। मगर एक ठहराव दृढ़ करना है.....मैं मोहताज़ बनूं, पर गुरुजी को कभी ना करूं, मेरा मन विरोध करे–नो प्रॉब्लम, मेरा चित्त विरोध करे–नो प्रॉब्लम, भूल होने ही वाली है–नो प्रॉब्लम, मनुष्यभाव आने ही वाला है–नो प्रॉब्लम। पर, रात्रि का भजन स्वाध्याय मस्ट.....अखंड जागृत रहना है.....काकाजी 1965 से 1971 तक एक ही बात करते रहते–'बालक बनो और भजन करो.....'

यह उत्सव हमारे लिए भक्ति का स्वरूप बने.....यह उत्सव संबंध में आगे बढ़ाने के लिए एक सुन्दर-अनुपम मौका बने.....यह उत्सव काकाजी, पप्पाजी और गुरुजी की आंतरिक प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए पर्मानेन्ट अवसर बने–यह अवसर सब का बने। सब आनंद-उल्लास में रहें इसलिए सब को बल-बुद्धि शक्ति दो.....यही स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना !

.....संतों की बात करके प.पू. गुरुजी ने अद्‌भुत बात रखी....**प्रारब्ध और प्रकृति संत की कृपा से ही टलते हैं। गुणातीत पुरुष का संबंध सभी गुण देता है।** काकाजी सुहृद् सम्राट ! योगीजी महाराज ने भी संप, सुहृद्‌भाव, एकता का अद्‌भुत सूत्र दिया। पप्पाजी भी काफी समय से एक ही बात करते रहते हैं कि अल्प संबंध वालों में महाराज का दर्शन करो। सुहृद्‌भाव का खंडन इसलिए होता है कि गुणातीत पुरुषों के सुहृद्‌भाव का दर्शन हमने किया नहीं है। केवल काकाजी-गुरुजी राजी हो जाएं ऐसी अगर दिल की गहराई से सच्ची अभिप्सा हो तो बुद्धियोग अवश्य मिलने वाला ही है। काकाजी ने सारा जीवन सुहृद्‌भाव के लिए युद्ध खेला। मेरा बाप सुहृद है, मेरा बाप सहनशक्ति का स्वरूप है तो मैं क्यों नहीं बनूं?

.....**ताड़देव** को मैं **आत्मीयता की गंगोत्री** कहता हूँ। तीन भाई **काकाजी, कांतिकाका, पप्पाजी ने वहां आत्मीयता का धोध–सुहृद्‌भाव का प्रवाह बहता ही कर दिया**.....थ्रू आऊट लाईफ एक ही आवाज़ वहां से निकलती थी–संबंध वाले कहाँ से? योगीजी महाराज कैसे? जो कसौटी कर रहे हैं वो बापा ही कर रहे हैं। ऐसी भावना से यदि हम जीवन जीयें तो प्रभु अपने संकल्प से सुहृद्‌भाव सहज बढ़ाते हैं.....

.....सामने वाले को प्रभु ही वर्ता रहे हैं....हम निमित्त हैं, कर्ता मत बनो। आपके लिए कोई दुःखदायी प्रसंग बन जाये, कोई आपका अपमान कर दे, तो भी प्रभु हर्ता हैं.....एक ही आकार-मगर किसी के अभाव में मत जाना। भावफेर में मत जाना। योगीजी महाराज ने कहा था–चार बातें जीव का जीवन है। उपासना, आज्ञा, एकांतिक में प्रीति और भगवदी के प्रति सुहृद्‌भाव.....यदि हम भगवदी के प्रति सुहृद्‌भाव रखेंगे तो और तीन बातें अपने आप सिद्ध हो जायेंगी–उपासना, आज्ञा, एकांतिक में प्रीति–जो कि कठिन चीज़ है। मगर सुहृद्‌भाव श्रेष्ठ गुण है। गुरुजी ने बताया सब साधनों में श्रेष्ठ सुहृद्‌भाव....

काकाजी को किंचित् भेददृष्टि नहीं।
काकाजी को सबके लिए समान भाव।
काकाजी को ना कोई छोटा ना कोई बड़ा.....
हर्षदभाई और पप्पाजी के प्रति एक भाव से खड़े रहना–वो काकाजी का दर्शन ! काकाजी के लिए पप्पाजी भी स्वरूप और हर्षदभाई भी बापा का स्वरूप !

.....गुरुजी जैसा संत है, उसके आगे सरलता–बस, 'हाँ जी'.....हार में बहुत अच्छी प्रार्थना रखी–'हाँ जी'। आप पहले, फिर मैं। आप मेरा सर्वस्व। आप सुहृद्‌सम्राट के मानसपुत्र हो, आपकी गर्मी (डाँट) और आपका प्रेम मुझको बराबर लगना चाहिए.....**निमित्त और संकल्प दोनों साधु जरूर समझे कि–**हमारे में कुछ बरकत नहीं है, हमारा अंतर का कुछ गुरुजी ने देखा ही नहीं है। गुरुजी ने सिर्फ प्रेम ही दिया। वो कचरा देखता ही नहीं है। वो काकाजी का संबंध ही देखता है। **हमारा कचरा कोई देखे तो हमको साधु बनाये ही नहीं। गुरुजी ने हममें काकाजी का ही दर्शन किया, प्रेम दिया और सहजता से हमको स्वीकार लिया।** सत्पुरुष को हमारे अंतःकरण के अन्दर की कचरा पेटी का पता है। वो देखते हुए भी वो सिर्फ एक संबंध देखते हैं.....

ब्रह्मचर्य से भी श्रेष्ठ गुण है सुहृद्‌भाव.....सुहृद्‌भाव रहे तो ब्रह्मचर्य स्थिर होगा.....सुहृद्‌भाव रहेगा तो निष्काम धर्म सहज रहेगा। सुहृदभाव रहेगा तो इन्द्रियाँ–अंतःकरण प्रभु के आकार से रहेंगी.....इसलिए किसी के अभाव देखो मत, किसी के भावफेर-अवगुण में मत पड़ो। किसी की चुगली-निंदा मत करो, किसी की ग्राम्यवार्ता मत करो.....

.....**आपको संबंध देखने का अधिकार है। किसी के दोष, स्वभाव, प्रकृति देखने का अधिकार नहीं है।** किंचित्-कभी सपने में भी नहीं। **कुसंगी का भी यदि अभाव लोगे तो एक दिन ऐसा आयेगा कि तुम निष्ठा वाले का, आत्मीय का, एकांतिक का और फिर आखिर भगवान स्वामिनारायण का अभाव लोगे ही।**

थोड़ा-सा भी किसी के प्रति भावफेर हो जाये और अगर हम स्वाध्याय भजन करके माफी नहीं माँगेगे, रात्रि को प्रार्थना नहीं करेंगे तो एक छोटा-सा छिद्र बड़ी नदी जितना बन जाएगा।

आज के मंगलकारी शुभ दिन गुरुजी ने सुहृदभाव के लिए जो बात की–बहुत अद्‌भुत बात.....संत का लक्षण एक ही है, वो निष्कामी है और निष्कामी बनाता है। वो पवित्र है, पवित्र बनाता है। वो निर्दोष है, निर्दोष बनाता है। साधु का वो अद्‌भुत गुण है। तो आज गुणातीत स्वरूपों के चरणार्विंद में प्रार्थना कि हम सब को ऐसा बुद्धियोग दो जिसके फलस्वरूप

हम संबंध करके स्वीकार करें। कर्ताहर्ता मान के सब परिस्थिति सानुकूल और प्रतिकूलता, मान और अपमान, सुख और दुःख में हम समदृष्टि रखें.....भुल्का के हृदय में से एक ही आवाज़ निकलती है–तू ही, तू ही। ऐसी पुकार सहित हम स्वाध्याय, भजन, प्रार्थना करते रहे.....उसके लिए गुणातीत पुरुषों खूब-खूब बल, बुद्धि, शक्ति दें.....ऐसी प्रार्थना !

–प.पू. स्वामिजी

✡

✡ .....गुणातीत घेर (कबीले) के हम साधु बने....इन्द्रियाँ अंतःकरण, स्वभाव, हठ, मान, ईर्ष्या की क्षितिज देखकर गुणातीतानंदस्वामी ने जितनी सरलता से बातें करी हैं– समझाई हैं, ऐसा आध्यात्मिकता में और कोई नहीं समझा सकता....

.....सुहृद्भाव गुणातीतभावना की नींव है.....ये जो दो नए संत हुए तब मेरी एक ही भावना है कि हम से कुछ हो या ना हो, लेकिन **जहां हम रहते हैं, जो-जो हमारे सम्पर्क में आते हैं; वो हर एक के साथ हम सुहृद्भाव से रहें। मंदिर में हर एक को ऐसा लगे कि ये साधु को मैं कोई भी काम दे सकता हूँ। मंदिर में जो भी आए उसे भी ऐसा लगे कि ये साधु हमारे हैं।** हमारे वर्तन से ही यह हो सकता है। पप्पाजी, स्वामिजी हम सब को ऐसे आशीर्वाद देकर जायें कि यहां ऐसा माहौल बना रहे.....

.....महाराज ने शिक्षापत्री में लिखा है कि नित्य प्रति मंदिर जाकर साधु का समागम करना.....बात बहुत छोटी-सी है, लेकिन ऐसे साधु से कब ऐसे बलभरे शब्द मिल जायें कि हमारी वृत्तियाँ-जो बरसों से नहीं टलती हों वो पिघल जाएं..... काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी मूर्तिमान हाज़िर हैं। इनसे यही प्रार्थना है कि आज आशीर्वाद दे जाएं कि हम सब जो साधु हैं– गुणातीत की घेर के साधु हैं, तो उसकी कभी लाज ना जाये।

सुहृद्भाव को कोई सीमा नहीं होती। हम दो-चार-पाँच के साथ सुहृद्भाव रख पायें– दूसरों के साथ नहीं रख पायें– तो फिर हमारे में कोई कसर है। इस बात को गुणातीतानंद-स्वामी ने अलग ढंग से कहा है कि **साधु को ऐसा होता ही नहीं कि इसका मैं सहन कर पाऊँगा, इसका सहन नहीं कर पाऊँगा। सभी का सहन कर पाये–वो साधु !** ऐसे कल्याणकारी गुण हमारे अन्तर प्रगटे–ऐसे स्वामिजी, पप्पाजी आशीर्वाद दे जाएं आज के दिन.....जब ये नए संत बने हैं। उसमें मैं भी शामिल हूँ.....बस यही प्रार्थना करनी है।

–प. पू. गुरुजी

Statement about Ownership and other particulars about news paper

'भगवत-कृपा'– 'THE DIVINE GRACE'

(Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Prabhakar Rao
4. Nationality	:	Indian
Address	:	19-D, Janta flats, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
5. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
7. Owner's Name	:	Yogi Divine Society
Nationality	:	Indian
Address	:	Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52

I, Prabhakar Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKAR RAO
Date: 25 March, 1998 Signature of Publisher

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 5.4.98	रविवार	–	रामनवमी भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती
(2) दि. 7.4.98	मंगलवार	–	एकादशी, व्रत
(3) दि. 13.4.98	सोमवार	–	बैसाखी
(4) दि. 23.4.98	गुरुवार	–	एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III,
Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II,
New Delhi-110 064 Tel.: 5401210, 5402393

TO,